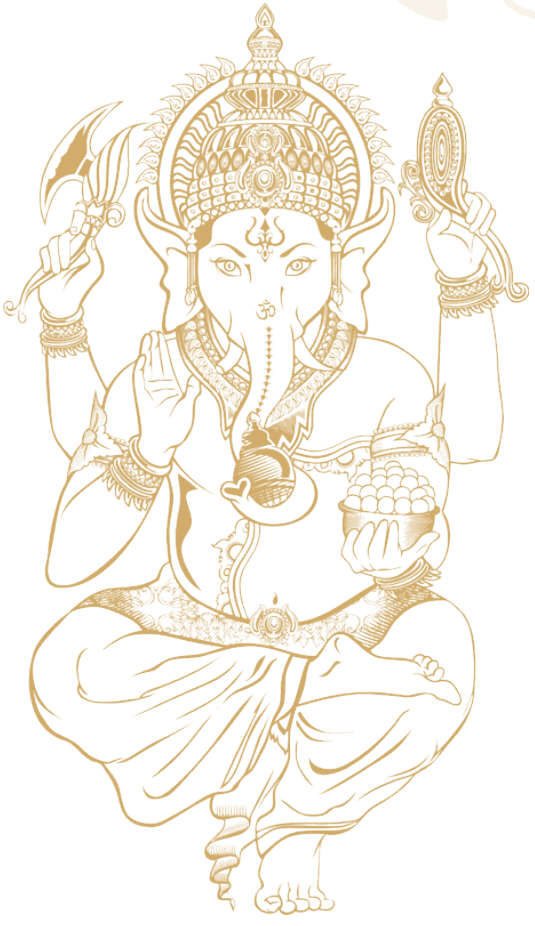

Mr.vishanu

18 Jul 2001

11:52 AM

Kolkata

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120356501

तिथि 18/07/2001 **समय** 11:52:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kolkata **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:52:27
अक्षांश 22:34:00 उत्तर **रेखांश** 88:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:23:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	07:59:56 घं
वेलान्तर	00:06:12 घं
सूर्योदय	05:02:10 घं
सूर्यास्त	18:23:07 घं
चैत्रादि संवत	2058
शक संवत	1923
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
तिथि	13
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	ध्रुव
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वो-वोमेश
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	शुक्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

मंगल 5वर्ष 1मा 25दि

गुरु

12/09/2024
12/09/2040

गुरु	31/10/2026
शनि	13/05/2029
बुध	19/08/2031
केतु	25/07/2032
शुक्र	26/03/2035
सूर्य	12/01/2036
चन्द्र	13/05/2037
मंगल	19/04/2038
राहु	12/09/2040

योगिनी

संकटा 5वर्ष 10मा 20दि

उल्का

08/06/2022
07/06/2028

उल्का	08/06/2023
सिद्धा	07/08/2024
संकटा	07/12/2025
मंगला	06/02/2026
पिंगला	08/06/2026
धान्या	08/12/2026
भ्रामरी	08/08/2027
भद्रिका	07/06/2028

ग्रह व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न	03:37:24	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	---	0:00			
सूर्य	01:49:33	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	2.07	कलत्र	पितृ	विपत
चंद्र	26:51:01	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	मूलत्रिकोण	1.09	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल व	21:15:15	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	स्वराशि	0.86	अमात्य	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	13:22:47	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	बुध	स्वराशि	1.14	पुत्र	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	07:17:15	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.21	ज्ञाति	धन	सम्पत
शुक्र	19:58:43	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	केतु	स्वराशि	1.45	भ्रातृ	कलत्र	अतिमित्र
शनि	17:00:00	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	मित्र राशि	1.00	मातृ	आयु	अतिमित्र
राहु	12:26:35	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	उच्च राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	12:26:35	धनु	मूल	4	केतु	बुध	उच्च राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

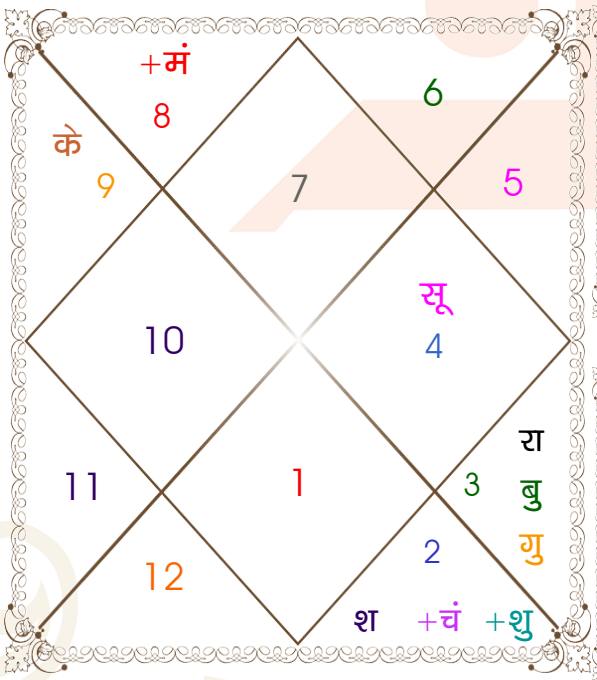

चन्द्र कुंडली

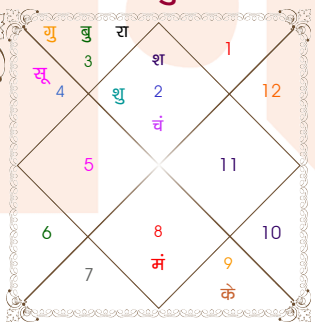

नवमांश कुंडली

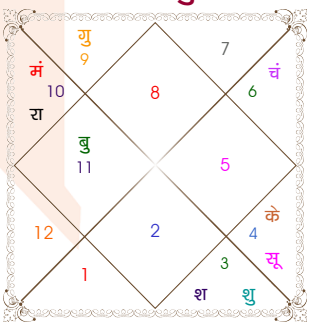

सर्वाष्टकवर्ग

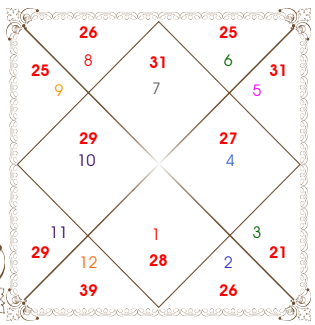

दशमांश कुंडली

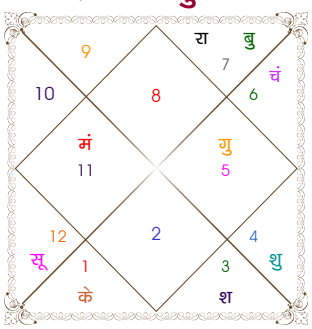

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य, गण देव तथा योनि सर्प होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथम अक्षर "वो" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा

नैसर्गिक रूप से चंचलता तथा चतुरता आपमें विद्यमान रहेगी। आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे चतुराई तथा धैर्यपूर्वक उसे सम्पन्न करेंगे। कभी कभी अभिमानी भाव का भी प्रदर्शन करेंगे तथा अन्य जनों की उपेक्षा करेंगे।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

प्रतिलिपि बनाने या किसी वस्तु का नकली प्रति रूप बनाने में आप को दक्षता प्राप्त होगी। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अपने बुद्धिबल तथा परिश्रम से सम्पन्न होंगे।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

स्वभाव से ही भय आपके मन में व्याप्त रहेगा। आप चतुर एवं विद्वान भी होंगे। आप हमेशा उत्साह युक्त रहेंगे तथा जीवन में उन्नति करेंगे। धन ऐश्वर्य एवं वैभव से तथा भौतिक सुखों का आप आजीवन उपभोग करेंगे।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करने में आप कुशल होंगे तथा इनके विषय में आपको काफी ज्ञान रहेगा। आप विनयशील होंगे। तथा सबसे नम्रता पूर्वक व्यवहार करेंगे। आप गुणों

का सम्मान करने वाले व्यक्ति होंगे तथा जो भी गुणवान व्यक्ति होंगे उनको आप श्रद्धापूर्वक नमन करेंगे। साथ ही गुणी व्यक्तियों में आप विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगे। धनैश्वर्य से सम्पन्न होने के कारण विलासिता के प्रति भी आप आकर्षित रहेंगे। मंत्री वर्ग अथवा उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के आप प्रिय होंगे तथा इन से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अपने जीवन को सत्य मार्ग पर ले जाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आप मन से हमेशा शान्त रहेंगे। आप भ्रमण तथा यात्रा करने के भी अधिक इच्छुक रहेंगे। जिससे आपका अधिकांश समय यात्राओं या घूमने में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आपका वर्ण लालिमायुक्त गौर वर्ण होगा तथा गाल अल्प मात्रा में स्थूल होंगे। आँखें आपकी विशाल तथा मोटी होंगी। यदा कदा आप आलस्य से भी ग्रसित रहेंगे। आप कुलीन लोगों के प्रति अत्यन्त सेवा तथा श्रद्धा का भाव रखेंगे तथा उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहेंगे। ब्राह्मण तथा गुरूजनों को भी आप पूर्ण रूप से सम्मान अर्पित करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपका स्वभाव कफ तथा वात दोनों से युक्त रहेगा। आप बुद्धिमान, धनवान तथा दानशील होंगे तथा बाल आपके घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार के भौतिक सुखों का उपभोग करेंगे। प्रवृति से आप दानी स्वभाव के होंगे तथा इसके लिए सदैव यत्नशील रहेंगे। शुद्धता या पवित्रता में आपकी अत्यधिक रूचि रहेगी। अपने अधिकांश सांसारिक कार्यो को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे। आप एक शक्तिशाली पुरुष होंगे तथा विलासिता से भी आप युक्त रहेंगे। धन आप पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगे अतः समस्त भौतिक सुख संसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं पर खुले रूप से व्यय करेंगे। आप तेजस्वी तथा श्रेष्ठ चाल चलन वाले होंगे तथा मित्र भी आपके अच्छे तथा सदगुणों से युक्त होंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आप लम्बे जानु तथा मुख वाले होंगे। आप जीवन के प्रथम दो भागों में कष्ट प्राप्त करेंगे परन्तु अन्तिम दो भाग खुशी एवं सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। आप स्त्री वर्ग से अत्यधिक ही आकर्षित रहेंगे। आपकी त्याग की भावना तथा क्षमाशीलता समाज में आपको उचित सम्मान प्रदान करेगी। प्रथम अवस्था में आप सामान्य रूप से कष्ट झेलेंगे तथा परिश्रम भी अधिक करेंगे। आपकी पीठ मुख तथा बगल में तिल,मस्सा या व्रण आदि का चिन्ह हो सकते हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपका आचरण श्रेष्ठ होगा तथा व्यवहार भी अन्य जनों से अच्छा रहेगा जिससे आप सम्मान के पात्र होंगे। सन्तति में आपकी पुत्र सन्तति से कन्या सन्तति अधिक मात्रा में उत्पन्न होगी। धनैश्वर्य युक्त होकर तथा उसका उपभोग करते हुए आपकी ख्याति चारों तरफ व्याप्त रहेगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विस्तृत होगा तथा बाल घने एवं घुंघराले होंगे। कामभावना की आप में प्रबलता रहेगी। आपका स्वभाव न्याय प्रिय होगा। आप दूध का दूध और पानी का पानी अलग करने में सक्षम होंगे अर्थात् सही तथा गलत का भेद करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी

चाल अत्यन्त ही सुन्दर होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ, स्थूल एवं सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप शनैः शनैः चलने में आनन्दानुभव करेंगे तथा अपने कार्यों को बुद्धिमानी तथा चतुराई से सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। आपके अन्तर्मन में परोपकार की भावना निहित रहेगी तथा इसके लिए आप जीवन में प्रयत्न शील रहेंगे। इस प्रकार आप अपने सत्कार्यों तथा पुण्य के द्वारा जीवन में सुखानुभूति प्राप्त करते हुए उसे व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

मुखमण्डल आपका दीर्घ तथा रूप सुन्दर होगा। कष्टों को सहने में आप सक्षम रहेंगे। आप सविलास गमन करने में रूचि रखेंगे। आप कोई उच्चाधिकार व्यक्ति भी बन सकते है। पेट में आपकी जठराग्नि अधिक रहेगी तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख की प्राप्ति करेंगे। आप मित्रता का भाव दीर्घ काल तक निभाने में भी सक्षम रहेंगे। साथ ही आप अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे। शिव तथा विष्णु भगवान में आपकी पूर्णास्था रहेगी तथा इनकी आराधना करेंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म देव गण में हुआ है। अतः आपकी वाणी अत्यन्त मधुर एवं उत्तम होगी। आप के मुँह से सत्य वाणी ही मुखरित होगी तथा जीवन में आप हमेशा सत्य का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त सादगी से युक्त होगी। अतः आप अपने विचारों को सुगमतापूर्वक प्रकट करने तथा अन्य के विचारों को सुगमतापूर्वक ग्रहण करने में सफल रहेंगे। आप अल्प मात्रा में सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। आप गुणवान होंगे तथा विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से आप युक्त रहेंगे। साथ ही आप समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए जीवन व्यतीत करेंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप देखने में सुन्दर एवं स्वस्थ होंगे। जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को

आप यथा शक्ति दान देना अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपका हृदय सादगी पसन्द होगा तथा भौतिक दिखावे से आप दूर ही रहेंगे। आपकी छवि समाज में श्रेष्ठ विद्वान की होगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है अतः कभी कभी आप क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। साथ ही प्रवृति आपकी चंचल होगी तथा सारे कार्य चंचलता से ही सम्पन्न करेंगे।आपकी जीभ भी चंचल होगी अर्थात् विभिन्न स्वादों का स्वाद लेने के लिए आतुर रहेंगे। संक्षेप में आप चटपटे स्वाद के प्रेमी होंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि में स्थित चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आपको चाहिए कि आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृह निर्माण, क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि कोई भी कार्य प्रारम्भ न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। ऐसे समय पर शरीर की सुरक्षा का भी पूर्ण रूपेण ध्यान रखना चाहिए।

यदि समय आपके लिए अनुकूल न चल रहा हो। मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता बढ़ रही हो या व्यापार में अथवा नौकरी में उन्नति के लिए बाधाएं उत्पन्न हो रही हो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से शुक्रवार के उपवास करने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इस प्रकार करने से आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। तथा अशुभ फल कम होंगे। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की भी आराधना कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।